International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(6): 05-06

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(6): 05-06
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-08-2020
Accepted: 07-10-2020

डॉ. सीमा देवी
सहायक प्रोफ़ेसर, राजकीय महिला महाविद्यालय, ऊन्हाणी, महेन्द्रगढ़, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सीमा देवी
सहायक प्रोफ़ेसर, राजकीय महिला महाविद्यालय, ऊन्हाणी, महेन्द्रगढ़, हरियाणा, भारत

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में शकुन/घटनाओं का पूर्वाभास

डॉ. सीमा देवी

प्रस्तावना

जीवन में जो अभीप्सित है, उसकी प्राप्ति ही शुभ है और उससे इतर अशुभ है। जब तक हमारी अन्तरात्मा बाह्य जगत के विकारों से मलिन नहीं होती है तो हमें स्वतः ही जीवन में घटित होने वाले शुभ व अशुभ का पूर्वाभास कराती रहती है। सामाजिक मान्यता के अनुसार भावी घटनाओं का ज्ञान पशु, पक्षी आदि प्रकृति तत्त्वों को भी हो जाता है। किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य के प्रारम्भ में दृष्टिगोचर शकुनों को समाज में प्रचलित मान्यताओं के अनुसार आंका जाता है तथा कार्य की सिद्धि तथा असिद्धि का पूर्वाभास पाने की चेष्टा की जाती है। इन निमितों अथवा शकुनों के प्रति आस्था भारतीय संस्कृति में स्पष्टतः दिखाई देती है। भारतीय संस्कृति के उपासक महाकवि कालिदास का विश्वास भी इन निमितों/शकुनों के प्रति अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दृष्टिगोचर हुआ है यथा–

दैवज्ञ महर्षि कण्व को शकुन्तला के प्रतिकूल भाग्य का पूर्वाभास हो गया था। अतः वे उसे आश्रम में अतिथि सत्कार के लिए नियुक्त करके, शकुन्तला के प्रतिकूल भाग्य के शमनार्थ सोमतीर्थ गए हैं।[1]

शारीरिक अंगों का स्पन्दन भी जीवन में होने वाले शुभ, अशुभ का सूचक है। मान्यता के अनुसार आने वाले शुभ की सूचना पुरूषों के दाहिने अंगों के फड़कने से और स्त्रियों के बायें अंगों के फड़कने से मिलती है। इससे विपरीत अशुभ को संकेतित करता है।

राजा दुष्यन्त के कण्व–आश्रम के द्वार पर पहुँचते ही दाहिनी भुजा का स्पन्दन उसे वर स्त्री की प्राप्ति का सूचक है। स्वयं दुष्यन्त को भी इस शकुन पर आश्चर्य होता है क्योंकि शकुन जिस विषय को सूचित कर रहा है उसके लिए यह स्थान उपयुक्त नही है–

> शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य।
> अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।। [2]
> 'स्त्री प्राप्ति' का सम्बन्ध 'रति' से है। जबकि यह आश्रम 'शम प्रधान' है।

कन्याओं का दर्शन रूपी शकुन प्रवेश व प्रस्थान में शुभ माना गया है।[3] आश्रम में प्रवेश करते ही दुष्यन्त को मुग्धकन्याओं अनसूया, प्रियवंदा तथा शकुन्तला का दर्शन होता है। जो उसे शकुन्तला प्राप्ति के लिए निर्देशित कर रहा है।

कभी–कभी शकुन और अपशकुन की सूचना स्वयं हमारे क्रिया–व्यापार के द्वारा भी मिल जाती है। शकुन्तला के प्रतिकूल भाग्य के शमन हेतु पुष्पावचय करती हुई अनसूया के हाथों से हड़बड़ी में ही सही पुष्पपात्र गिर जाता है और फूल धरती पर बिखर जाते हैं।– 'अहो आवेगस्खलितया गत्या प्रभ्रष्टं ममाग्रहस्तात्पुष्पभाजनम्'[4] जो स्वतः ही उस पर आने वाली विपत्ति की ओर इंगित कर रहा है। पुष्पभाजन का हाथ से गिर जाना अपशकुन माना जाता है। इससे यह बात भी स्पष्ट होती है कि दुर्वासा ऋषि शकुन्तला पर पूर्ण रूप से दया नहीं करेंगे।

शकुन्तला के गन्धर्व विवाह की बात सर्वप्रथम महर्षि कण्व को यज्ञशाला में ज्ञात हुई। उस समय हवनकुण्ड में प्रज्वलित अग्नि धूमाकुलित हो गई।[5] अग्नि का धूमाकुलित होना दुर्निमित है क्योंकि आहुति प्रक्षेपण के समय अग्नि की ज्वाला हिरण्यवर्णा होनी चाहिए। इसका तात्पर्य है कि शकुन्तला का भावी अमंगल होगा।

मंगल मण्डल के समय शकुन्तला का रोना, उसका पतिगृह में होने वाले अपमान का सूचक है। मांगलिक वेला में देवताओं से स्वस्ति कामना रहनी चाहिए न कि रुदन। जिसका तत्काल निषेध अनसूया ने भी किया– 'सखि! उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्'[6]

पतिगृह के लिए प्रस्थान के समय शकुन्तला का प्रतिपद स्खलन भी दुर्निमित को इंगित करता है।[7]

दुष्यन्त के पास जाती हुई शकुन्तला का दीर्घपोत नामक मृगबाल का दुपट्टा खींचकर मार्ग को अवरूद्ध करना उसका पतिगृह में होने वाले अपमान का सूचक है।[8]

शकुन्तला की विदाई के समय अचानक चक्रवाकी का आक्रन्दन भी दुनिर्मित है।[9] जो उसके प्रत्याख्यान की भावी घटना को संकेतित कर रहा है।

नगर में प्रवेश करते ही शाङ्र्गरव व शारद्वत की मनःस्थिति भी भावी अमंगल की सूचक है।[10] जो पहले ही शकुन्तला का दुष्यन्त द्वारा होने वाले प्रत्याख्यान को निर्दिष्ट कर रही है।

वन देवताओं से अनुमति तथा महर्षि कण्व के आशीर्वाद से अभिषिक्त होकर शकुन्तला पतिगृह में पैर रखती है तभी वामेतर नयन के स्पन्दन से घबरा जाती है। शकुन्तला–अहो! किं मे वामेतरं नयनं विस्फुरति।[11] यह उस पर आने वाली विपत्ति का पूर्वाभास करा रहा है।

मातली के आगमन से, शकुन्तला के परित्याग से निराश, हताश दुष्यन्त में पुनः उत्साह का संचार होना, भावी मंगल को संकेतित कर रहा है।[12]

मारीच ऋषि के आश्रम में प्रवेश करते ही बालक सर्वदमन का दर्शन शुभ शकुन के रूप में निर्मित हैं[13] क्योंकि प्रवेश के समय कन्याओं या बालकों का दर्शन शुभ होता है।

मारीच ऋषि के आश्रम में आत्मावमानना की भावना से युक्त दुष्यन्त हृदय में दक्षिण भुजा के स्पन्दन से पुनः आशा का संचार होता है,[14] परन्तु वह इस स्पन्दन को व्यर्थ मानता हुआ सोचता है कि अब मेरे बाहु स्पन्दन से सम्बद्ध मनोरथ की सिद्वि कैसे होगी, क्योंकि पहले उसने सहज प्राप्ति शकुन्तला रूपी मनोरथ को तिरस्कृत कर दिया था।

मनोरथाय नांशसे किं बाहो स्पन्दसे वृथा।
पूर्वावधीरतं श्रेयो दुखं हि परिवर्धते।।[15]

परन्तु यहीं मारीच ऋषि के आश्रम में दुष्यन्त का केवल शकुन्तला से ही नहीं, अपितु अपने चिर प्रतीक्षित पुत्र सर्वदमन से भी मिलन हो जाता है।

शकुन्तला के प्रत्यभिज्ञान पश्चात्, विदाई के समय मारीच दम्पती का दर्शन, दुष्यन्त एवं शकुन्तला के जीवन में भावी कल्याण का सूचक है। [16] भारतीय परम्परा में ऋषियों का दर्शन हमेशा से ही कल्याणकारी, मंगलदायी, पुण्यफलदायी माना गया है।

संदर्भ

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम्–महाकविकालिदासविरचितम्,सम्पादक–डॉ. शिवबालक द्विवेदी, प्रकाशक–हंसा प्रकाशन, जयपुर, संस्करण 2016 ,पृ. 43–दैवमस्याः प्रतिकूलं शमयितुं सोमतीथं गतः।(प्रस्तुत शोध–पत्र में इसी संस्करण का उपयोग किया गया है)
2. वही, 1.16, पृ. 51
3. वही, पृ. 53 – 'अहो, मधुरमासां दर्शनम्'।
4. वही, पृ. 243
5. वही, पृ. 255– 'दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि याजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता।
6. वही, पृ. 263
7. वही, 4.15, पृ. 287– 'अस्मिन्नलक्षितनतोन्नतभूमिभागे मार्गे पदानि खलु ते विषमी भवन्ति'।
8. वही, पृ. 284– को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते।
9. वही, पृ. 289 –'चक्रवाक्यारटति, दुष्करमहं करोमीति।
10. वही, 5.10, पृ. 328 –'जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव।
11. वही, पृ. 331
12. वही, पृ. 439 – 'भोस्तिरस्करिणीगर्वित, मदीयमस्त्रं त्वां प्रक्ष्यति'।
13. वही, पृ. 466 – 'अये, को नु खल्वयमनुबध्यमानस्तपस्विनीभ्यामबालसत्त्वो बालः'।
14. वही, पृ. 465 – (निमित्तं सूचयित्वा)।
15. वही, 7.13, पृ. 465
16. वही, पृ. 489–'एत्वायुष्मान्। भगवान् मारीचस्ते दर्शनं वितरति'।